नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मिलावटखोरी; जहर बन गया खाना

भारत में खाद्य सुरक्षा को लेकर सामने आई ताजा रिपोर्ट केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं, बल्कि एक गंभीर चेतावनी है. भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण के 2024-25 के आंकड़े बताते हैं कि देश में हर छह में से एक खाद्य नमूना मानकों पर खरा नहीं उतरता. इससे भी अधिक चिंताजनक तथ्य यह है कि दूध जैसे बुनियादी और रोजमर्रा के उपभोग की वस्तु में 38 फीसदी सैंपल फेल पाए गए. यह स्थिति न केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है, बल्कि शासन-प्रशासन की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े करती है.

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आसान कार्य नहीं है, लेकिन वर्तमान व्यवस्था की खामियां इसे और जटिल बना रही हैं. सबसे बड़ी समस्या है खुले खाद्य पदार्थों की बिक्री. देश में लगभग 70 फीसदी खाद्य सामग्री खुले में बेची जाती है, जिसमें दूध और मसाले प्रमुख हैं. इस तरह के उत्पादों की निगरानी और ट्रेसिंग लगभग असंभव हो जाती है. इसके विपरीत, विकसित देशों में पैकेजिंग और ट्रैकिंग सिस्टम इतने मजबूत हैं कि किसी भी स्तर पर गड़बड़ी होने पर तुरंत कार्रवाई संभव होती है.

दूसरी गंभीर खामी है 'सेल्फ-डिक्लेरेशन' की व्यवस्था. कंपनियां स्वयं अपने उत्पाद को सुरक्षित घोषित कर बाजार में उतार देती हैं, जबकि लैब जांच बाद में होती है. इसका परिणाम यह होता है कि खराब या मिलावटी उत्पाद पहले ही उपभोक्ताओं तक पहुंच जाते हैं. जापान और अन्य विकसित देशों में बिना प्रमाणित लैब रिपोर्ट के खाद्य उत्पादों की बिक्री की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

तीसरी चुनौती है प्रशासनिक संसाधनों की भारी कमी. देश में केवल 2,623 फूड सेफ्टी अफसर 58 लाख से अधिक खाद्य इकाइयों की निगरानी कर रहे हैं. यानी एक अधिकारी पर औसतन 2200 फर्मों की जिम्मेदारी है. यह अनुपात किसी भी प्रभावी निरीक्षण व्यवस्था के लिए अव्यवहारिक है. तुलना करें तो कनाडा में एक अधिकारी पर मात्र 50 फर्मों की जिम्मेदारी होती है. इससे स्पष्ट है कि भारत में निगरानी तंत्र न केवल कमजोर है, बल्कि लगभग प्रतीकात्मक बनकर रह गया है.

चौथी बड़ी समस्या है लैब नेटवर्क का अभाव. 62 लाख लोगों पर एक फूड टेस्टिंग लैब का होना यह दर्शाता है कि जांच व्यवस्था कितनी सीमित है. कुल 252 लैब पूरे देश के लिए पर्याप्त नहीं हैं. ऐसे में त्वरित और व्यापक परीक्षण की उम्मीद करना व्यावहारिक नहीं लगता.

इन परिस्थितियों में यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत में खाद्य सुरक्षा अभी भी 'कागजी व्यवस्था' तक सीमित है. जबकि वैश्विक उदाहरण बताते हैं कि सख्त कानून, जीरो टॉलरेंस नीति और मजबूत ट्रेसबिलिटी सिस्टम से इस समस्या पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है.

समाधान स्पष्ट हैं, लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है. 'फार्म टू फोर्क' ट्रैकिंग सिस्टम को अनिवार्य बनाना होगा, ताकि हर उत्पाद की यात्रा को ट्रेस किया जा सके. 'सेल्फ-डिक्लेरेशन' की व्यवस्था को समाप्त कर सख्त लैब परीक्षण को प्राथमिकता देनी होगी. साथ ही, फूड सेफ्टी अधिकारियों की संख्या में व्यापक वृद्धि और लैब नेटवर्क का विस्तार अनिवार्य है. 'प्रोडक्ट रिकॉल' जैसी सख्त व्यवस्था भी लागू करनी होगी, ताकि बाजार में पहुंच चुके खराब उत्पादों को तुरंत हटाया जा सके. कुल मिलाकर यह मुद्दा केवल नीतियों का नहीं, बल्कि नागरिकों के स्वास्थ्य और जीवन से जुड़ा है. यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो भारत की थाली में मिलावट का यह जहर आने वाले वर्षों में और गहरा संकट बन सकता है.

भाजपा की विराट यात्रा

कार्यकर्ता के विश्वास से शिखर तक

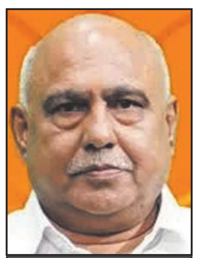

हेमंत खंडेलवाल

6 अप्रैल केवल एक स्थापना दिवस नहीं, बल्कि उन अनगिनत कार्यकर्ताओं के तप, त्याग और संकल्प का स्मरण है, जिन्होंने विचार को जीवन का ध्येय बनाकर संगठन को शिखर तक पहुंचाया. भारतीय जनता पार्टी की यात्रा सत्ता के शिखर तक पहुँचने की कहानी भर नहीं है, यह उस विश्वास की कहानी है जिसमें पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़ा कार्यकर्ता भी स्वयं को राष्ट्र निर्माण का सहभागी मानता है. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जब जनसंघ का बीज रोपा, तब परिस्थितियां प्रतिकूल थीं, लेकिन राष्ट्रवाद का संकल्प अडिग था. पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने उस बीज को 'अंत्योदय' की भावना से सींचा, यह विचार कि विकास का केंद्र वही अंतिम व्यक्ति होगा, जो अब तक व्यवस्था से दूर रहा. यही वह मूल था, जिसने संगठन को केवल राजनीतिक दल नहीं, बल्कि विचार परिवार बनाया.

समय के साथ श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इस विचार को जन-जन तक पहुंचाया. संवाद, संवेदनशीलता और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ उन्होंने भाजपा को जनभावनाओं का प्रतिनिधि बनाया. वहीं श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे जैसे संगठन पुरुषों ने कार्यकर्ता को केंद्र में रखकर संगठन को खड़ा किया. उन्होंने यह स्थापित किया कि भाजपा में पद नहीं, बल्कि परिश्रम और प्रतिबद्धता ही पहचान है. यही कारण है कि दो सांसदों से प्रारंभ हुई यात्रा आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में स्थापित हुई है. यह विस्तार किसी एक नेता या एक कालखंड का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों तक बूथ स्तर पर कार्य करने वाले उन कार्यकर्ताओं का है, जिन्होंने बिना किसी अपेक्षा के विचार को आगे बढ़ाया.

> अंत्योदय' के सिद्धांत को केंद्र में रखते हुए जनकल्याण की अनेक योजनाओं के माध्यम से करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाया गया है. जनधन योजना के तहत करोड़ों लोगों को पहली बार बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा गया. आयुष्मान योजना ने गरीबों को स्वास्थ्य सुरक्षा दी, उज्ज्वला योजना ने रसोई को धुएँ से मुक्त किया, और प्रधानमंत्री आवास योजना ने लाखों परिवारों को अपना घर दिया. हर घर जल और बिजली जैसी पहलें जीवन की बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हुई हैं. यह परिवर्तन केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि आमजन के जीवन में वास्तविक बदलाव के रूप में दिखाई देता है. यही सुशासन का वास्तविक अर्थ है—जहाँ योजनाएँ कागजों से निकलकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचती हैं. मध्यप्रदेश इस यात्रा का सशक्त उदाहरण है. यहाँ कार्यकर्ता संस्कृति केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन पद्धति है. बूथ से लेकर प्रदेश तक, हर स्तर पर कार्यकर्ता की भूमिका निर्णायक रही है. आज मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में प्रदेश विकास और सांस्कृतिक चेतना के नए आयाम स्थापित कर

भाजपा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी वैचारिक स्पष्टता रही है. राष्ट्र प्रथम का भाव, अंत्योदय का लक्ष्य और संगठन सर्वोपरि का संस्कार, इन सिद्धांतों ने हर कार्यकर्ता को एक दिशा दी है. यही कारण है कि भाजपा में कार्यकर्ता केवल समर्थक नहीं होता, वह विचार का जीवंत प्रतिनिधि होता है. 2014 के बाद संगठन और सरकार के समन्वय ने इस विचार को नई गति दी. अमित शाह जी के संगठनात्मक विस्तार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व ने भाजपा को वैश्विक स्तर पर एक सशक्त पहचान दी. आज भारत की राजनीति में भाजपा केवल एक दल नहीं, बल्कि परिवर्तन का पर्याय बन चुकी है.

आज भाजपा भारतीय राजनीति की केंद्रीय धुरी बन चुकी है. जिन क्षेत्रों में कभी इसकी उपस्थिति सीमित थी, वहाँ आज जनसमर्थन के बल पर सरकारें स्थापित हुई हैं. पूर्वोत्तर के राज्यों—असम, त्रिपुरा, मणिपुर सहित सभी प्रदेशों में भाजपा का विस्तार यह दर्शाता है कि विचार और संगठन जब साथ चलते हैं, तो असंभव भी संभव हो जाता है. कश्मीर से कन्याकुमारी तक, ग्राम पंचायत से लेकर संसद तक भाजपा की उपस्थिति निरंतर सुदृढ़ हो रही है.

यह विस्तार केवल राजनीतिक सफलता नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक वैचारिक यात्रा का परिणाम है. जनसंघ से लेकर भाजपा तक कार्यकर्ता जिस संकल्प के साथ गाँव-गाँव पहुँचे थे, वह आज साकार होता दिखाई देता है. यह यात्रा किसी एक नेता या एक कालखंड की नहीं, बल्कि पीढ़ियों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है.

भाजपा की विचारधारा केवल सिद्धांतों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसे नीति और निर्णयों के माध्यम से व्यवहार में उतारा गया. अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण और अनुच्छेद 370 का निरसन—ये केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि दशकों पुराने संकल्पों की सिद्धि हैं. यह उस वैचारिक दृढ़ता का परिणाम है, जिसके लिए कार्यकर्ताओं ने वर्षों तक संघर्ष किया.

इसी प्रकार, तीन तलाक कानून, नागरिकता संशोधन कानून और आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार जैसे निर्णय यह दर्शाते हैं कि भाजपा केवल राजनीति नहीं करती, बल्कि नीतिगत परिवर्तन के माध्यम से समाज में स्थायी बदलाव लाने का प्रयास करती है

(लेखक- भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष व बैतूल विधायक हैं)

विंध्य की डायरी

युवा मोर्चा प्रदेश कार्यकारिणी में विंध्य क्षेत्र की उपेक्षा

डॉ. रवि तिवारी

भाजपा की युवा मोर्चा प्रदेश पदाधिकारियों की टीम तैयार हो गई है. गुरूवार की देर रात टीम की घोषणा कर दी गई, विंध्य को निराशा हाथ लगी. एक बार फिर महत्व न देकर उपेक्षा की गई. 56 पदों वाली कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री, कार्यालय मंत्री, कोषाध्यक्ष और मीडिया प्रभारी जैसे महत्वपूर्ण पद विंध्य से फिसल गये. जबकि मध्य क्षेत्र , मालवा, निमाड़, महाकौशल, बुंदेलखण्ड, ग्वालियर एवं चम्बल क्षेत्र को कार्यकारिणी में महत्व दिया गया है और बघेलखंड की एक तरह से उपेक्षा की गई. केवल सतना से मन की बात प्रभारी ध्रुव वीर विक्रम सिंह को बनाया गया है. जबकि अन्य जिलों से किसी को प्रदेश की टीम में शामिल नही किया गया है.

कभी प्रदेश कार्यकारिणी में विंध्य का दबदबा होता था जो अब कम हो गया है. विंध्य क्षेत्र में चार लोकसभा व 30 विधानसभा सीट आती है, रीवा व शहडोल संभाग के 9 जिलो के बीच सिर्फ सतना को मौका मिला है. पिछले 2003 से लगातार विधानसभा चुनाव में विंध्य से सबसे ज्यादा विधायक चुन कर जा रहे है और चारो लोकसभा सीट भाजपा का गढ़ है. इसके बाद भी विंध्य क्षेत्र की उपेक्षा समझ से परे है. भाजपा युवा मोर्चा में निराशा के बादल छा गये है. क्या विंध्य में कार्यकर्ता पार्टी के मजबूती के लिये काम नही करते या फिर दूसरे शब्दो में कहे कि विंध्य का राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रदेश संगठन में बेहद कमजोर है. यही वजह है कि लगातार विंध्य की उपेक्षा हो रही है. जबकि सबसे ज्यादा सीटे विंध्य से ही पार्टी को मिलती रही है. विंध्य को जिस तरह से किनारे किया जा रहा है उससे कार्यकर्ताओं में नाराजगी के साथ आने वाले समय में पार्टी को नुकसान भी हो सकता है.

आप पार्टी को लगा झटका

विंध्य में कांग्रेस और भाजपा के बाद तीसरे विकल्प के रूप में आम आदमी पार्टी उभर रही थी. विंध्य में कमजोर पड़ चुकी बसपा के बाद लगा था कि उसके स्थान पर आप पार्टी अपना स्थान बनाने में सफल होगी पर संगठन ही खड़ा नहीं हो पा रहा है. रीवा में पार्टी के अध्यक्ष राजीव सिंह परिहार ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है. उन्होने अपना इस्तीफा प्रदेश प्रभारी को भेजा है. इस्तीफे के पीछे भले ही उन्होने अपनी व्यस्तता बताई हो पर असल में उनकी नाराजगी निकल कर सामने आई है. संगठन के भतीर कुछ मुद्दो को लेकर असंतोष था जिसके चलते इस्तीफा दे दिया. इस्तीफे के दूसरे दिन ही पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता प्रमोद शर्मा ने भी अपने पद से इस्तीफा दे दिया. इन दोनो के इस्तीफे से पार्टी को बड़ा झटका लगा है. संगठनात्मक तौर पर पार्टी अभी अपने पैर नहीं जमा पा रही है. कई वर्षो बाद भी विंध्य में पार्टी संगठन को मैदानी स्तर पर खड़ा करने में असफल रही है.

संसद में गूंजा केन्द्रीय विवि का मुद्दा

सीधी संसदीय क्षेत्र के सांसद डा. राजेश मिश्रा ने लोकसभा में शून्यकाल के दौरान औद्योगिक कारिडोर एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय का मुद्दा उठाया. बरगवां से कटनी मार्ग को औद्योगिक कारिडोर के रूप में स्वीकृत प्रदान करने की मांग रखी गई. तो वही सांसद ने शून्यकाल में अपने लोकसभा क्षेत्र में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलने की मांग रखी. सदन में बताया कि सम्पूर्ण लोकसभा क्षेत्र के अन्तर्गत एक भी विश्वविद्यालय नहीं है और उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये 300 किलो मीटर तक का सफर करना पड़ता है. सांसद ने केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोले जाने की मांग उठाई है.

एकता का पाठ पढ़ाकर गए प्रदेश अध्यक्ष

युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष यश घनघोरिया पदभार ग्रहण करने के बाद पहली बार विंध्य के दौरे पर पहुंचे. रीवा, सीधी में अध्यक्ष ने कार्यकर्ताओं को संगठन को मजबूत बनाने के साथ बूथ स्तर पर सरकार की गलत नीतियों का खुलासा करने के साथ ही हर वर्ग के युवाओं को जोडने का संदेश दिया. अध्यक्ष ने आगामी चुनाव को लेकर अभी से मैदान में उतरने और संगठन को बूथ स्तर तक पहुंचाने का पाठ पढ़ाया. गुटबाजी को लेकर एकता और एक साथ मिलकर काम करने का भी संदेश कार्यकर्ताओं को देकर गये.

दलगत सीमा से परे अजातशत्रु थे दत्ता मेघे

मेरे लिए बड़े भाई समान रहे वरिष्ठ नेता दत्ताभाऊ मेघे का हाल ही में निधन हो गया. उनकी यादों का सैलाब मेरे मन में उमड़ आया है. अत्यंत सरल और सहयोगी स्वभाव का व्यक्तित्व दत्ताभाऊ को प्राप्त था. ईश्वर की कृपा से उनके हिस्से में जो भी समृद्धि आई, उसमें से जरूरतमंदों को हिस्सा मिलता रहे, इसके लिए उन्होंने जीवनभर प्रयास किया. राजनीति में रहते हुए भी अजातशत्रु बने दत्ताभाऊ एक अनोखा व्यक्तित्व थे. उनसे एक बार जुड़ा हुआ व्यक्ति कभी उनसे दूर नहीं होता था. गरीबों के प्रति संवेदनशीलता और करुणा उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी. उन्होंने हमेशा लोगों के हित के लिए प्रयास किया. गरीबों और उपेक्षितों की सेवा की. राजनीतिक रूप से कोई उनके पक्ष में है या विरोध में, इस पर विचार किए बिना उन्होंने लोगों की मदद की. उसी दौरान उन्होंने रविनगर सीपी एंड बेरार स्कूल में फार्मेसी कॉलेज शुरू किया. आगे चलकर इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज भी शुरू किए और एक बड़ा शैक्षणिक साम्राज्य खड़ा किया. दत्ताभाऊ ने राजनीति, शिक्षा, सहकार और समाजसेवा जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ी. उनके व्यक्तित्व की वास्तविक पहचान उनकी उदारता और आत्मीयता थी. जीवन के एक चरण में दत्ताभाऊ राजनीति में आए, विधायक, मंत्री और सांसद बने, लेकिन उन्होंने असंख्य लोगों सेजुड़े अपने रिश्तों को कभी नहीं बदला. संस्थागत कार्यों में वे अग्रणी रहे. उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों का व्यापक जाल खड़ा किया, जिससे सैकड़ों लोगों को रोजगार मिला और गरीब एवं जरूरतमंद छात्रों के लिए शिक्षा की व्यवस्था भी हुई. दत्ताभाऊ का स्नेहभाव दलगत सीमाओं से परे था. यही कारण था कि वे अजातशत्रु थे. राजनीति में उनके विरोधी भी एक समय पर उनके प्रशंसक बन गए, यह उनके सरल और आत्मीय स्वभाव के कारण ही संभव हुआ. विरोधियों के साथ भी उनके संबंध आत्मीय बने रहते थे. यहां तक कि जो नेता उनकी आलोचना करते थे, उन्हें भी वे गुप्त रूप से आर्थिक सहायता देते थे, ऐसा दुर्लभ व्यक्तित्व थे दत्ताभाऊ. उनके लिए व्यक्ति महत्वपूर्ण था, पार्टी नहीं. दत्ताभाऊ असंख्य लोगों के लिए एक मजबूत आधार थे. पिछले कुछ वर्षों में हमने मिलकर 'ज्येष्ठ नागरिक प्रतिष्ठान' का कार्य शुरू किया था, जिसमें उनका बड़ा योगदान और मार्गदर्शन मिला.

-नितिन गडकरी, केंद्रीय मंत्री, सड़क परिवहन और राजमार्ग

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

ट्रंप ने मैक्रों को रुसवाई बीवी के थप्पड़ की याद दिलाई

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के बारे में कहा कि उनकी पत्नी ब्रिजिट उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार करती हैं. मैक्रों अब भी अपने जबड़े पर पड़े थप्पड़ की चोट से उबरे नहीं हैं.'

हमने कहा, 'ट्रंप को दूसरे के घर में ताकझांक नहीं करनी चाहिए. यह मैक्रों और उनकी बीवी का पर्सनल मामला है. वे प्यार करें या मारपीट, उनकी मर्जी! यह मामला मई 2025 का है जब मैक्रों वियतनाम यात्रा पर गए थे. विमान एयरपोर्ट पर उतरने के बाद उसका दरवाजा खुला तो लोगों ने देखा कि मैक्रों को उनकी पत्नी गाल पर झन्नाटेदार तमाचा मार रही हैं. इसे मैक्रों ने चुपचाप बर्दाश्त कर लिया.'

हमने कहा, 'ऐसा लगता है कि मैक्रों महात्मा गांधी के अहिंसा के उपदेश से प्रभावित हैं. बापू ने कहा था कि यदि कोई तुम्हारे गाल पर एक तमाचा मारे तो विनम्रता से दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो!'

पड़ोसी ने कहा, 'आप गलत समझ रहे हैं निशानेबाज!

पश्चिमी देशों में पत्नियां भी खूंखार हुआ करती हैं. वह पति से बराबरी से लड़ती हैं. फोर्क या किचन नाइफ का उपयोग करने या लात-घूंसा मारने में भी पीछे नहीं रहतीं. वहां मैरिज एक कांट्रैक्ट है, भारत के समान 7 जन्मों का अटूट बंधन नहीं. दूसरी बात यह कि मैक्रों की बीवी उनसे 25 साल बड़ी हैं. जिस तरह वह अपने पूर्व पति से हुए बच्चों को दबाकर रखती हैं वैसा ही बर्ताव मैक्रों के साथ भी करती हैं. इतने पर भी यह उनका व्यक्तिगत मामला है. चारदीवारी के भीतर हो या विमान के अंदर, मैक्रों कभी भी पिटाई के लिए तैयार रहते हैं. उनका रवैया है- तू प्यार करे या ठुकराए, हम तो हैं तेरे दीवानों में! जैसे अपने देश में वाइफ बीटिंग या पत्नी की पिटाई की घटनाएं होती हैं वैसे ही पश्चिमी देशों में हस्बैंड बीटिंग या पति की ठुकाई हो जाती है. रोज मांसाहार करने और शराब पीनेवाली महिलाएं इतनी क्रूर हो जाती हैं. यदि ट्रंप को मैक्रों से इतनी ही स्पर्धा है तो वह भी अपनी पत्नी मेलानिया से कह सकते हैं कि प्लीज गिव मी ए टाइट स्लैप (मुझे एक जोर का थप्पड़ मारो).'

हमने कहा, 'ट्रंप इसलिए मैक्रों से खफा हैं क्योंकि फ्रांस ने ईरान पर हमले में उनका साथ नहीं दिया और अपनी नौसेना के जहाज भेजने से मना कर दिया. यूरोप के देशों का सहयोग न मिलने से ट्रंप की हालत खिसियानी बिल्ली खंबा नोचे जैसी हो गई है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12219

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		■	3		4	5
6		■	7		■	8	
9		■	10		11	■	
■	■	12	■	13		14	■
15	16		17	■	18		19
20		■		■	21		
22		23	■	24	■	■	
	■	25				■	

ऊपर से नीचे

1. रोशनी, प्रकाश 2. व्यापार-उद्यम से पैसा उत्पन्न करना 3. किसी वस्तु का मूल्य या दर 4. राजव्यवस्था का उलट दिया जाना, पूर्ण परिवर्तन (रिवोल्यूशन) 5. कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना 7. शंका, संदेह (उर्दू) 11. विवाह आदि अवसरों पर रात भर जागना 12. भूमि खेत का नाप जो बीस बिस्वे का होता था 14. दृष्टांत, किसी एक निर्णय को अन्य अभियोग में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करना (उर्दू) 15. जो छपकर लोगों के सामने आ गया हो, चमकता हुआ 16. टीका, राज्याभिषेक 17. गीला, शीतल 19. सदा, सर्वदा 23. हवा 24. जो अच्छा न हो, निकृष्ट,

बाएं से दाएं

1. बैठने का वह ढंग जिसमें घुटने मोड़ कर छाती से लगाते हैं 3. बोझ से दबा हुआ (सं.) 6. पोशाक, लिबास, एक प्रकार का पहनावा (उर्दू) 7. लाश, मृत शरीर 8. शरीर पर काले रंग का छोटा दाग 9. कहीं से कोई वस्तु लेकर आना 10. पंक्ति, श्रेणी 13. मातृभूमि (उर्दू) 15. आघात के बदले में किया जाने वाला आघात 18. टापू, द्वीप (उर्दू) 20. समय, वक्त, मृत्यु 21. नष्ट, बर्बाद (उर्दू) 22. शिकायत, उलाहना 25. राजा का सबसे बड़ा बेटा जो राज्य का उत्तराधिकारी हो

Solution 12218

दे	हां	त	■	मु	ज	रा	■
व	■	र	ज	■	का	य	म
क	र	स	मा	ह	र्ता	■	च
■	स	■	■	व	■	मो	ल
द	रा	ज	■	स	रा	ह	ना
म	ज	ह	ब	■	■	न	■
यं	■	म	ल	म	ल	■	ग
ती	■	त	म	■	ब	हि	श्त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसायिक कार्यो में परिश्रम अधिक करना पडेगा. व्यय और संतान की चिन्ता से मन अशांत रहेगा. वाणी में कठोरता तथा प्रियजनों के प्रति उदासीनता रहेगी. मान सम्मान के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. प्रभाव बना रहेगा. राजकीय सम्मान की प्राप्ति का योग है. वर्ष के अन्त में प्रतिष में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग रहेगा. नवीन कार्यो के प्रति रूचि रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग मिलेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों के लिये व्यवसायिक कार्यो में परिश्रम अधिक करना पडेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से लाभ मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को संतान पक्षर की चिन्ता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नियमितता का ध्यान रखना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्ति का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा हो सकती है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, हृष्टपुष्ट, मिलनसार होगा. विचार सुलझे हुये रहेंगे, परिश्रमी एवं लगनशील होगा. शिक्षा साधारण होते हुये भी अच्छा प्रभाव जमायेगा, मनोरंजन घूमने फिरने आदि का शौकीन होगा. आर्थिक संपन्न रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

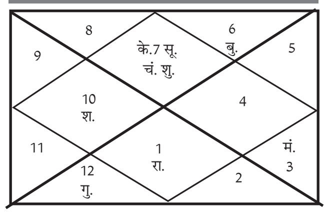

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण चतुर्थी चन्द्रवासरे दिन 12/1, अनुराधा नक्षत्रे रात 1/0, सिद्धि योगे दिन 1/53, बालव करणे सू.उ. 5/49, सू.अ. 6/11, चन्द्रचार वृश्चिक, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

मेष- कुछ सामाजिक व्यस्तता सामने आयेगी, अकारण तनाव को टालें, अतिथि का आगमन होगा, जिसकी व्यवस्था करना पड़ेगी, संतान सुख मिलेगा.

वृषभ- संतान सुख मिलेगा, विवादास्पद मामले टालने का प्रयास करें, धार्मिक आयोजन में शामिल होकर खुशी होगी, दुविधा की स्थिति से बचें.

मिथुन- परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, अनपेक्षित कार्यो पर खर्च होगा, उदर विकार से कष्ट होगा, अनुभव की कमी से लाभ में कमी होगी.

कर्क- पुराना विवाद हल होने से प्रसन्नता होगी, नियोजित कामकाज बनेगा, व्यय पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. परामर्श लेना उचित रहेगा.

सिंह- आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, बाधायें दूर होंगी, पारिवारिक सुख एवं आनन्द रहेगा, भाग्योदय के अवसर सामने आयेंगे.

कन्या- नये संपर्को से लाभ होगा, मित्र वर्ग मदद करेगा, पराक्रम में वृद्धि होगी, नवीन योजना बनेगी. नियोजित कार्य पूरे होंगे, यश मिलेगा.

तुला- जमीन संबंधी मामले पक्ष में हल होंगे, विवादास्पद मामले बातचीत से हल होंगे, मनोरंजन पर खर्च होगा, अचानक लाभ का योग है.

वृश्चिक- निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें, मनोरंजन के कार्यो पर खर्च होगा. फोन पर कोई खुश खबरी मिलेगी. बनता हुआ कार्य उलझ सकता है.

धनु- मेहमानों की आवाजाही में व्यस्त रहेंगे, मेहनत का लाभ मिलेगा, आर्थिक संतुलन बनाये रखें, राजकीय कार्यो में सफलता प्राप्त होगी.

मकर- जिसे आप घाटे का सौदा मान रहे हैं, उसमें अच्छा लाभ होगा, धार्मिक कार्य पूजा पाठ लेखनादि के कार्यो में रूचि रहेगी, सम्मान प्राप्त होगा.

कुम्भ- जहां तक बने यात्रा न करना हितकर रहेगा, घर में किसी के सहयोग से काम बनेगा, मांगलिक कार्यो पर खर्च की अधिकता रहेगी.

मीन- पारिवारिक आनन्दोत्सव होगा, सुख शांति मिलेगी, दूर दराज की यात्रा हो सकती है, नियोजित कामकाज बनेगा, मानसिक सौहाद्रता बनी रहेगी.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण चतुर्थी को अनुराधा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ शक्कर, के भाव में जट, पाट, बारदाना, गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द मूँग, में तेजी होगी, आज जिस वस्तु में पिछले दिन के भाव टूटें उसी में तेजी मानें, भाग्यांक 1441 है.

SUDOKU 7351

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7350

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1